ओ३म्

भारतीय संस्कृति का मूलाधार
पुरुषार्थ चतुष्टय

(विदुरनीति, चाणक्यनीति, हितोपदेश, पञ्चतन्त्र के आलोक में)

Author Copy. Not for Distribution.

Publishing-in-support-of,

EDUCREATION PUBLISHING

RZ 94, Sector - 6, Dwarka, New Delhi - 110075
Shubham Vihar, Mangla, Bilaspur, Chhattisgarh - 495001

Website: *www.educreation.in*

© Copyright, Authors

All rights reserved. No part of this book may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted, in any form by any means, electronic, mechanical, magnetic, optical, chemical, manual, photocopying, recording or otherwise, without the prior written consent of its writer.

ISBN: 978-1-5457-0813-2

Price: ₹ 315.00

The opinions/ contents expressed in this book are solely of the authors and do not represent the opinions/ standings/ thoughts of Educreation or the Editors . The book is released by using the services of self-publishing house.

Printed in India

Author Copy. Not for Distribution.

ओ३म्

भारतीय संस्कृति का मूलाधार
पुरुषार्थ चतुष्टय

(विदुरनीति, चाणक्यनीति, हितोपदेश, पञ्चतन्त्र के आलोक में)

लेखक

आशीष कुमार

EDUCREATION PUBLISHING
(Since 2011)
www.educreation.in

Author Copy. Not for Distribution.

Author Copy. Not for Distribution.

ओ३म्

विषयानुक्रणिका

क्र.		
	पुरोवाक्	**vi**
	प्रस्तावना	**viii**
1	**प्रथम अध्याय** – विषय प्रवेश	**1**
2	**द्वितीय अध्याय**- धर्म का स्वरूप	**6**
3	**तृतीय अध्याय-** अर्थ का स्वरूप	**46**
4	**चतुर्थ अध्याय**– काम का स्वरूप	**73**
5	**पञ्चम अध्याय**- मोक्ष का स्वरूप	**100**
6	**षष्ठ अध्याय** – उपसंहार	**147**

Author Copy. Not for Distribution.

पुरोवाक्

भारत का अभिज्ञान इसके महनीय ग्रन्थों एवं लोककल्याणकारी विपुल वाङ्गय में सन्निहित है। यह समग्र वाङ्मय भारतीय संस्कृति को उद्भासित करता है, जिससे यह देश विश्व-गुरु के महनीय आसन पर आसीन हो सका। भारतीय संस्कृति में ब्रह्मज्ञान तथा आत्मविश्वास के आयामों की ओर विशेषरूप से ध्यान दिया जाता है। आत्मा की पवित्रता के लिए तप एवं साधनों को अनिवार्य माना गया है। इस अध्यात्म भावना के अनुसार यह माना गया है कि इस संसार से परे भी एक सत्ता है, वही समस्त प्राणियों में व्याप्त है।

इसी भारतीय संस्कृति में कमल के पुष्प सौन्दर्य, कोमलता, पवित्रता और मांगल्य का प्रतीक माना गया है। आम्रपल्लवों के वन्दनवारों से शुभ अवसरों पर गृहसज्जा और पूजा हेतु कलश की स्थापना आवश्यक मानी जाती है। तुलसी और पीपल के वृक्ष को देवता माना जाता है। नारियल के बिना तो शायद ही कोई धार्मिक अनिष्ठान पूर्ण होता हो। ऐसी कोमल व मनोहर भारतीय संस्कृति ने पुरुषार्थ चतुष्टय को जन्म दिया, तथा पुरुषार्थ चतुष्टय को विशेष महत्त्व प्रदान किया।

Author Copy. Not for Distribution.

विद्वानों ने पुरुषार्थ के सिद्धान्त को भारतीय संस्कृति की आत्मा माना है। पुरुषार्थ चतुष्टय को धार्मिक, भौतिक एवं आध्यात्मिक तत्त्वों का निवेशन बताया है।

मानव जीवन का चरम लक्ष्य मोक्ष की प्राप्ति है। अर्थ और काम इस लक्ष्य तक पहुँचाने के माध्यम है। माध्यमों का प्रयोग किस प्रकार किया जायें, इसे स्पष्ट करने काम धर्म का है। इस प्रकार मनुष्य के मोक्ष के लिए धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष को पुरुषार्थ चतुष्टय के अन्तर्गत स्वीकार किया गया है।

प्रस्तुत लेखक ने पुरुषार्थ चतुष्टय पर शोधपूर्ण गहन विवेचन किया है। ये आरम्भिक अध्ययन होने के कारण इसकी उपादेयता है। इस विषय के विवेचन के अनेकविध दृष्टिकोण हो सकता है। लेखक का दृष्टिकोण सहानुभूतिपूर्ण है, जो इस अवधारणा की मूलभावना को समझने में सहायक है। अपने इस परिश्रम के लिए वे साधुवाद के पात्र हैं। मैं इनके ग्रन्थ की अनुशंसा करती हूँ।

डा. अर्चना कुमारी
सहायक प्राध्यापिका
राजकीय महाविद्यालय बौन्द कलाँ
हरियाणा

Author Copy. Not for Distribution.

प्रस्तावना

भारत के ऐतिहासिकता विकासक्रम से यह स्पष्ट हो जाता है कि सामाजिक संगठन, रीति-नीति और दर्शन सभी कट्टर सिद्धान्तवादिता की अपेक्षा भारतीय संस्कृति ने सदैव उदार समन्यवयवादिता का परिचय दिया है। बदलती हुई परिस्थितयों के अनुकूल अपने स्वरूप में संतुलित परिवर्तन करके अपने अस्तित्व को सुरक्षित रखने का प्राणीशास्त्रीय सिद्धान्त संस्कृतियों पर भी लागू होता है। एक तरह से देखा जाए तो विविध संस्कृतियों की महत्वपूर्ण विशेषताओं को आत्मसात करते-करते उदारता और अनुकूलन के गुण सहज ही भारतीय संस्कृति में विकसित हुए हैं। व्यक्ति के पुरुषार्थ की भावना समन्वय से मानी गयी है। भौतिक और आध्यात्मिक जीवन का सुख समन्वय पर ही आधारित रहा है। मनुष्य का विकास इहलौकिक और पारलौकिक दोनों स्थितियों के समन्वय से ही सम्भव है।

अनुकूल और प्रतिकूल तथा सहयोगी और विरोधी प्रवृत्तियों में समन्वय स्थापित करके चलना भारतीय संस्कृति का मूल आधार तत्व रहा है। सम्पूर्ण जगत् चाहे जड़ हो या चेतन सभी में समन्वय की भावना विद्यमान रहती है। जीव और ब्रह्म, आत्मा और परमात्मा, लौकिक और पारलौकिक, कामना और साधना, भोग और योग, ग्रहण और त्याग आदि समन्वय स्थापना के परिचायक है।

सामाजिक संस्थाओं के जो आचार-विचार बनाये गये हैं। उनमें समन्वय की भावना परिलक्षित होती है। आश्रम व्यवस्था पूर्णरूपेण समन्वयवादी भावना पर आधारित है। धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष सभी समन्वय पर आधारित है। जो भारतीय संस्कृति का एक नियम है। इसी भारतीय संस्कृति को भारतीय ऋषि-मुनियों ने तो स्वीकार किया ही है, अपितु सम्पूर्ण विश्व ने इस संस्कृति का लौहा माना है। इसी भारतीय संस्कृति की आज विलुप्त को देखते हुए मैनें भी इस भारतीय संस्कृति के मूलाधार पुरुषार्थ चतुष्टय नामक पुस्तक की रचना की है। ताकि भारतीय संस्कृति की अमूल्य निधि समाप्त न हों। तथा समाज में विद्यमान बुराईयों से बचा जा सके। वर्तमान में लोग नास्तिक होते जा रहे हैं। इससे लोग आस्तिक बनें। मैंने अपने प्रयास से भारतीय संस्कृति के मूलाधार नामक पुस्तक के विभिन्न अध्यायों को इस प्रकार से संयोजित किया है।

Author Copy. Not for Distribution.

प्रथम अध्याय- विषय प्रवेश

इसमें संस्कृति की परिभाषा, भारतीय संस्कृति का महत्व, पुरुषार्थ का अर्थ तथा पुरुषार्थ का स्वरूप तथा पुरुषार्थ चतुष्टय की वर्तमान में उपयोगिता को प्रस्तुत किया है।

द्वितीय अध्याय- धर्म

इस अध्याय में धर्म का अर्थ, धर्म का स्वरूप, धर्म का फल तथा धर्म के मुख्य मार्ग तथा गौण मार्गों को प्रस्तुत किया है।

तृतीय अध्याय- अर्थ

इस अध्याय में अर्थ का अर्थ, अर्थ का महत्व, अर्थवान् और निर्धन की दशा, अन्याय से उपार्जित धन का फल, धन का विनियोग, आदि विषयों को प्रस्तुत किया है।

चतुर्थ अध्याय- काम

इस अध्याय में काम का अर्थ, काम शब्द के पर्यायवाची शब्द, काम के प्रकार, काम का महत्व तथा काम मनुष्य के लिए साधक तथा बाधक विषयों को प्रस्तुत किया है।

पञ्चम अध्याय- मोक्ष

इस अध्याय में मोक्ष शब्द का अर्थ, मोक्ष के प्राप्ति के साधन, मोक्ष का स्वरूप विषयों को प्रस्तुत किया है।

षष्ठ अध्याय- उपसंहार

इस अध्याय में सभी अध्यायों को एक सार के रूप में प्रस्तुत किया है। इस पुस्तक के कुछ अध्याय में शोधप्रबन्ध के है तथा कुछ अध्यायों पर मैनें शोधप्रबन्ध के अनन्तर काम किया है। मेरे इस पुस्तक का उद्देश्य वर्तमान काल की स्थितियों को सुधारने का है। यदि हम कही भी जाते हैं, हमें वही पर बेईमानी, अनाचार, दुराचार दिखाई पड़ता है। इन विषम परिस्थितियों से अपनी इस सर्वश्रेष्ठ संस्कृति को बचाना ही ध्येय है इस पुस्तक की सफलता में मै अपने पुजनीय गुरुजनों तथा अपने माता-पिता को देता हूँ। जिन्होने मेरे को इस लायक बनाया है।। अब ये पुस्तक मै विद्वानों के करकमलों में सोपता हूँ। गुरुजनों से मेरी अपेक्षा है कि मेरे इस शोधकार्य में हुई त्रुटियों को क्षमा करने की कृपा करें तथा इसे स्वीकार कर

Author Copy. Not for Distribution.

आशीष को शुभाशीष प्रदान करें। अब प्रस्तुत पुस्तक विद्वानों के कर-कमलों में सोंपता हूँ।

गच्छतः स्खलनं क्वापि भवत्येव प्रमादतः।
उत्थाप्य सानुकम्पं हि समादधति सज्जनाः॥

Author Copy. Not for Distribution.

प्रथम अध्याय
विषय प्रवेश

मानव जीवन के तीन पक्ष ज्ञान, भाव एवं कर्म है। जिसे वैचारिक दृष्टि से बुद्धि, हृदय एवं व्यवहार कहा जा सकता है। जीवन में जब इन तीनों तत्त्वों का सामंजस्य होता है तब उसे संस्कृति कहते हैं। संस्कृति शब्द की व्युत्पत्ति सम् उपसर्ग पूर्वक कृ धातु में भाव अर्थ में क्तिन् प्रत्यय लगाने पर हुई है। संस्कृति शब्द का सम्बन्ध **संस्कार** शब्द से है। संस्कृति शब्द का अर्थ है संस्करण, परिमार्जन, शोधन, परिष्करण इत्यादि। ऐसी क्रिया जो व्यक्ति में निर्मलता का संचार करें। किसी वस्तु को यहाँ तक संस्कारित और परिष्कृत करना हि इसका अन्तिम उत्पाद हमारी प्रशंसा और सम्मान प्राप्त कर सके। यह ठिक उसी तरह है जैसे संस्कृत भाषा का शब्द संस्कति। संस्कृति उन भूषणरूपी सम्यक् चेष्ठाओं का नाम है जिनके द्वारा मानव समूह अपने आन्तरिक और बाह्य जीवन को अपनी शारीरिक मानसिक शक्तियों को संस्कारवान विकसित और दृढ़ बनाता है। वस्तुतः संस्कृति इतनी व्यापक और बृहद् चेष्ठाओं का भण्डार है जो सनातन काल से क्रमिक रूप में निखरती आई है और जिन्होंने मानव के सर्वांगिण विकास में पूरा-पूरा योगदान भी दिया है। संस्कृति मानव समूह के उन आचार-विचारों की प्रणाली का प्रतिनिधित्व करती है जो मनुष्य को सुसस्कृत बनाकर उसे सभी प्रकार योग्य समर्थ बनाती है।

शिक्षाविदों के अनुसार संस्कार मनुष्य एवं जाति दोनों के होते हैं। जातीय संस्कारों को ही संस्कृति की संज्ञा दी जाती है।[1] संस्कृति के द्वारा किसी देश के धर्म, साहित्य, मानवीय मूल्यों, रीति-रिवाजों लक्ष्यों एवं आदर्शों को जाना जा सकता है।

भारतीय चिन्तकों ने विज्ञान, दर्शन, धर्म और संस्कृति की व्याख्या करते हुए कहा गया है कि बाहर की ओर देखना विज्ञान तथा अन्दर की ओर देखना

[1]. भारतीय संस्कृति के मूल तत्व पृ.1

Author Copy. Not for Distribution.